

साईं सियाराम जे सनेह में नितु लीन रहे ।
जिय जल में बि प्यासी सदाई मीन रहे ॥
अलौकिक नीह नातो नाथ सां तो जोड़ियो ।
रही रस राग मगनु वर खे वण वलियुनि वोड़ियो ।
रुगो प्रिया प्रीतम जे पद कमलनि कुशलु चहे ॥
न का निंड नेणनि में न भोजन जी काई ओन रखी ।
राति दींह लीला जे चिंतन जी चाशिनी आ चखी ।
रूप सागर में टुबी देई अमुलु लालु लहे ॥
रिषी मुनी धन्यु चवनि प्रेम जो परिवाहु दिसी ।
प्रीतमु भी प्रेम मगनु थिए अबल अनुरागु पसी ।
तुंहिजो मटु तूं ई कोकिल गद् गद् कंठ साणु चवे ॥
रटे नितु नामु युगल आंसुनि जी झरिड़ी लाती ।
पल पल पढ़ंदा रहनि तुंहिजे प्रेम जी पाती ।
जै जै मैगसि चंद्र जी गगन में सदां गूंज रहे ॥